# आलस्य और अलबेलापन - 41

**अव्यक्त बापदादा :-**

➳ _ ➳ विनाश की बाते तो स्थापना के समय से चल रही हैं। विनाश कहते-2 कितने वर्ष हो गये। अभी भी पता नहीं विनाश कब हो। **थोड़ा सा अलबेले के, आलस्य के, ढीले पुरुषार्थ के डनलप के तकिये में आराम कर लें। समय पर ठीक हो जायेंगे। बाप को भी यह पक्का कराते हैं कि आप देखना हम समय पर बहुत नम्बर आगे ले लेंगे।**

➳ _ ➳ लेकिन बापदादा ऐसे बच्चों को सदा सावधान करते हैं कि समय पर जागे और समय प्रमाण परिवर्तन किया तो यह कोई बड़ी बात नहीं हैं। लेकिन **समय के पहले परिवर्तन किया तो आपके पुरुषार्थ में यह पुरुषार्थ की माक्स जमा होगी और अगर समय पर किया तो समय को माक्स मिलेगी आपको नहीं मिलेगी।**

➳ _ ➳ **तो टोटल रिज़ल्ट में अलबेले या आलस्य के नींद के कारण धोखा खा लेंगे। यह भी कुम्भकरण के नींद का अंश है।** बड़ा कुम्भकरण नहीं है, छोटा है। फिर उसको क्या हुआ? अपने को बचा सका? नहीं बच सका ना! तो अन्त समय में भी अपने को फुल पास के योग्य नहीं बना सकेंगे। समझा! **कभी कैसी रुहरुहान करते हो, कभी बहुत हिम्मत की भी करते हो, कभी नाज़-नखरे की करते हो और कभी खिटपिट की करते** हो। (15.04.1992)

---

➢ **निश्चय**

➳ _ ➳ 4 प्रकार के निश्चय है

→ **बाप** पर निश्चय

→ **स्वयं** पर निश्चय

→ **ब्राह्मण परिवार** पर निश्चय

→ **समय** पर निश्चय

➳ _ ➳ **बाप पर निश्चय**

→ बाप जो है, जैसा है

→ उसको उसी रीती से जानना, मानना और उस पर चलना

- एक बाप पर **सम्पूर्ण विश्वास** रखना है
  - जैसा वो, वैसे हम
  - कौन चला रहा है हमे, उस पर विश्वास रखना है
- **एक बल, एक भरोषा** बाप पर रखना है
  - ऐसा भरोषा
  - ऐसा निश्चय बाप पर रखना है
- बाप जैसा **भोला** जरुर बनना है
  - परन्तु कर्म में

- ▶ और बातों में भोला नही बनना है
- ▶ वहा तो त्रिकालदर्शी बनना है
- ▶ आदि मध्य अंत को सोच क्र ही तुम्हे कोई भी बात करनी है

## ➳_ ➳ स्वयं पर निश्चय

→ स्वयं जो है, जैसा है

→ उसको उसी रीती से जानना, मानना और उस पर चलना

→ बाबा ने कहा है, तुम हो **मास्टर सर्वशक्तिवान**

→ **तुममे सारी शक्तिया है**

→ तुम **साधारण नही** हो

→ तुम **महान आत्माये** हो

- ■ यह सब निश्चय होना चाहिये
  - ▶ एक तो जानना
    - ▶ मतलब ज्ञान को जानना
    - ▶ उसको अन्तर मन से स्वीकार करना
  - ■ अन्तर मन यह स्वीकार करना चाहिये की,
    - ▶ मैं कौन हु
    - ▶ मैं कौनसी आत्मा हु
    - ▶ **अपनी महानता को स्वयं के मन को स्वीकार कराना**
  - ■ हमारी आत्मा में अनंत शक्तिया भरी हुई है
    - ▶ ऐसा कुछ भी नही है, जो हम नही कर सकते है
    - ▶ **असंभव शब्द ब्राह्मणों की DICTIONARY में ही नही है**
  - ■ वेदों में जो दिव्य पुरुषो का वर्णन किया गया है
    - ▶ वो हम ही तो है
  - ■ हमारा प्रकाश सूर्य की तरह है
  - ■ हम अंधकार को मिटाने वाले है
    - ▶ इतना दिव्य प्रकाश हमारे अंदर है
    - ▶ हम साधारण आत्माये नही है
  - ■ हम अजर, अमर, अविनाशी आत्माये है
    - ▶ हमारा देह विनाशी नही है
  - ■ ५ तत्वों का जो भूतो का संगठन है
    - ▶ वो हम नही है
  - ■ मूजमें अनंत शक्तिया भरी हुई है
    - ▶ यह जानना ही स्वयं में निश्चय करना है

## ➳_ ➳ ब्राह्मण परिवार पर निश्चय

→ ब्राह्मण परिवार जो है, जैसा है

→ उसको उसी रीती से जानना, मानना और उस पर चलना

- परिवार पर निश्चय रखने पर बच्चे बाबा को कहते है की,
  - बाबा हमने तो आप पर निश्चय रखा था
  - परिवार पर निश्चय रखने को नहीं कहा था
- हमने तो बाबा आपसे सोदा किआ था
  - परिवार से सोदा नही किआ था
- बाबा आप तो बहुत अरछे हो, ज्ञान भी बहुत अरछा है
  - यह दादिया, यह टीचर बहन हमे अरछी नही लगती ही
  - पर यह परिवार के भाई बहन हमे अरछे नही लगते है
  - यहा पर तो बहुत खिटपिट होती रहती है

→ इन सब पर बाबा ने जवाब दिया की,

- यह राजधानी स्थापन हो रही है
  - **तो सबके साथ मिलकर तुम्हे चलना है**
  - ब्रह्मा, सरस्वती अकेले राज्य करेंगे क्या
  - जब वह मुक्ति में होंगे तो
  - अकेले राज्य करोगे क्या ?
  - **इन्ही सब आत्माओ के साथ ही तो राज्य करना है**
  - इसलिए अभी जेलते रहो

→ यह कौनसा परिवार है ?

- **प्रभु प्यारो का परिवार है**
- **महान आत्माओ का संगठन है**
- **परमत्मा ने स्वीकार किआ हुआ परिवार है**
- **परमात्मा का चुना हुआ परिवार है**
  - **चाहे भाई हो , चाहे बहन हो**
  - **सब बाप के काम के बच्चे है**

## ➳_ ➳ समय पर निश्चय

→ कोनसा समय चल रहा है ?

- श्रेष्ठ समय
- पुरुषोत्तम बनने का समय
- **जिस समय आत्मा और परमात्मा का मिलन होता है उस समय को**
  - **संगमयुग कहा जाता है**

- अगर इस युग की महिमा करो तो
  - नयन गिले हो जायेंगे

→ **समय से पहले स्वयं को परिवर्तन कर लेना है**

- **वरना समय की विजयी होगी**
- **समय की बलिहारी होगी**